वानिकी समाचार

वन विभाग, राजस्थान का मासिक पत्र

वर्ष : 29 अंक : 2 अप्रैल : 2012

जल थल और नभ करे पुकार।
पृथ्वी का हरितिमा से हो श्रृंगार

वन मंत्री का तालछापर दौरा

प्रदेश की माननीया वन मंत्री श्रीमती बीना काक ने दिनांक 23-24 फरवरी, 2012 को चूरू जिले में स्थित तालछापर अभयारण्य का निरीक्षण किया। इस अवसर पर राज्य के प्रधान मुख्य वन संरक्षक (एच.ओ.एफ.एफ.) श्री यू. एम. सहाय, प्र.मु.व.स. एवं मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक श्री ए. सी. चौबे तथा सम्भागीय मुख्य वन संरक्षक श्री ए. एस. गुरु भी उपस्थित रहे।

आपने तालछापर अभयारण्य प्रबन्धन की प्रशंसा करते हुए तालछापर में एक रेस्क्यू सेन्टर की स्थापना पर बल दिया। इन निर्देशों की पालना में रेस्क्यू सेन्टर की स्थापना का कार्य इसी वर्ष की योजना में सम्मिलित कर लिया गया है।

22 अप्रैल, 2012 पृथ्वी दिवस पर विशेष

पृथ्वी दिवस : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

यू. एम. सहाय

1970 के दशक का आरम्भ ही पृथ्वी के लिए अनेक खतरों की सूचना लेकर आया था। इसी समय विश्व के वैज्ञानिकों ने अनेक ऐसी घटनाओं को चिन्हित किया जो पृथ्वी व उसके पर्यावरण के लिए खतरे का संकेत थे। एक के बाद एक अनेक ऐसी घटनाएँ सामने आने लगीं। ओजोन परत का क्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव, अम्ल वर्षा आदि के रूप में अनेक संकट पृथ्वी व पृथ्वी के जैव विविधता के समक्ष दिखाई देने लगे। औद्योगिक क्रान्ति के परिणामस्वरूप स्थापित औद्योगिक इकाइयाँ बड़े पैमाने पर जहरीली गैसों और धुएं का उत्सर्जन एवं तथा खतरनाक अपशिष्ट छोड़ने लगी। वायु प्रदूषण सम्पन्नता की गन्ध के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इस समय तक ''पर्यावरण'' शब्द अस्तित्व में आ चुका था और विश्व को भावी पर्यावरणीय चुनौतियों का आभास हो गया था। इन चुनौतियों से पृथ्वी को संरक्षित करने के उपायों पर विभिन्न स्तरों पर चिन्तन आरम्भ हुआ।

इसी समय एक अमेरिकी सीनेटर गेलार्ड नेल्सन, जो कि पृथ्वी दिवस के संस्थापक माने जाते हैं, ने कैलिफोर्निया के युद्ध विरोधी छात्र आन्दोलन से प्रभावित होकर अनुभूत किया कि जल एवं वायु प्रदूषण के सम्बन्ध में जन चेतना जागृत की जा सकती है। जन शक्ति के सहयोग से पर्यावरणीय सुरक्षा को राजनैतिक एजेण्डे में शामिल कराया जा सकता है। जन शक्ति को संगठित करने के लिए उन्होंने डेनिस हेयर को संयोजक नियुक्त किया और इन्होंने मात्र 85 व्यक्तियों की मदद से विश्व में अनेक आयोजन करने का बीड़ा उठाया।

नेल्सन के प्रयासों से 22 मई, 1970 को पूरे अमेरिका में रैलियों का आयोजन किया गया। लगभग 2 करोड़ अमेरिकन नागरिक, गलियों, सड़कों, पार्कों व आडिटोरियमों में एकत्रित हुए और

शेष पृष्ठ 8 पर...

सम्पादक मण्डल :

संरक्षक

यू. एम. सहाय

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राज.

सम्पादक

एस. के श्रीवास्तव

अति. प्रधान मुख्य वन संरक्षक (विकास)

उप सम्पादक

अरिंदम तोमर

मुख्य वन संरक्षक, सूचना प्रौद्योगिकी

सहायक सम्पादक

डॉ. सूरज जिद्दी

सम्पादकीय...

पृथ्वी संरक्षण : ज्वलंत समस्या

वानिकी समाचार का ये अंक आपके हाथों में होगा तब आप पृथ्वी दिवस के विभिन्न आयोजन में जुटे होंगे। आज इस बात की महत्ती आवश्यकता है कि हम अपने ग्रह पृथ्वी को बचाने के लिए हर संभव प्रयास करें ताकि पर्यावरणीय चुनौतियां इसके अस्तित्व के सामने प्रश्न चिन्ह न खड़ा कर दे। पृथ्वी दिवस केवल एक दिन होने वाला आयोजन ही न समझा जावे अपितु पृथ्वी बचाने की एक सतत प्रक्रिया का वार्षिक प्रारम्भ समझा जाना चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि पृथ्वी पर रहने वाले समुदायों के समक्ष जो पर्यावरणीय संकट उभर रहे हैं उनके प्रति पर्याप्त जन चेतना जागृत की जाए। इस हेतु जनता विशेषकर बच्चों, छात्र-छात्राओं में पर्यावरणीय साहित्य का वितरण व प्रदर्शन, ग्लोबल वार्मिंग जैसे आसन्न संकटों व उससे निपटने के उपायों, वायु, जल, वाहन, खाद्य एवं मृदा प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण के उपायों से उन्हें अवगत कराना, तथा उन्हें अपने जीवन में इन उपायों को अपनाने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। वृक्षारोपण भी इन चुनौतियों से निपटने का एक कारगर तरीका है। साथ ही समुदायों को भी ये समझने की आवश्यकता है कि यदि वे विकास और पर्यावरण के मध्य उचित संतुलन बनाए रखने के लिए प्रयासरत नहीं रहे तो हमें विकास की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

आइये वर्ष 2012 के पृथ्वी दिवस पर हम पृथ्वी को बचाने के हर संभव उपायों पर न केवल अमल करें बल्कि दूसरों को भी प्रेरित करें। तब ही पृथ्वी दिवस की सार्थकता प्रमाणित होगी।

❑ एस. के. श्रीवास्तव

आगामी मास के पर्यावरणीय पर्व

शुक्रवार, 4 मई, 2012 : पक्षी दिवस

छाया : पी. सी. जैन

दीर्घकाल से पक्षियों की सुन्दरता, उनके गीतों और उनकी उड़ानें मानव जीवन के लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। पक्षी संवेदनशील प्राणी है तथा उनका अस्तित्व स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र तथा पर्यावरणीय प्रदूषणों के मापक के रूप में एक पैमाने की भांति कार्य करता है। किन्तु पर्यावरणीय अवक्रमण के कारण उनके आवास समाप्त होने, रोगों के प्रकोप व अन्य दबावों के चलते अनेक पक्षी प्रजातियां या तो विलुप्त हो गई हैं अथवा संकटापन्न है। एक अनुमान के अनुसार विश्व की कुल 9800 प्रजातियों में से लगभग 12 प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त हो सकती हैं। पक्षी प्रजातियों को विलुप्ती से बचाने व उन्हें स्वस्थ बनाए रखने के लिए जन शिक्षा व जन जागृति आवश्यक है। अत: इस दिन को पूरी तरह पक्षियों को समर्पित करते हुए उन्हें बचाए रखने के प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

22 मई, 2012 : अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस

जैव विविधता सम्बन्धी मुद्दों पर आपसी समझ विकसित करने तथा जन जागृति के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र संघ ने 22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस घोषित किया है। संयुक्त राष्ट्र ने 22 मई, 1992 को जैव विविधता सन्धि के प्रारूप को प्रवर्तित किया था अत: दिसम्बर, 2000 में 22 मई को अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस के रूप में अपना लिया गया। इस दिन विश्व की जैव विविधता को बचाने के लिए जन जाग्रति विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 2012 के लिए इस दिवस की थीम ''मैरीन बायोडायवर्सिटी'' रखी गई है। अर्थात् इस वर्ष यह दिवस समुद्री पारिस्थितिकी को समर्पित किया गया है।

पीले फूलों का कैर

डॉ. सतीश कुमार शर्मा

कैर (कैपेरिस डेसिडूआ) रेगिस्तान में उगने वाली एक विचित्र वनस्पति हैं जो एक साल में दो बार फूल व फल प्रदान करती है। गर्मी प्रारम्भ होते ही यह पौधा पुष्प पैदा करता है। इस ऋतु का पुष्पन अधिकता में होता है। यह पौधा झाडी से लेकर छोटे वृक्ष रूप में उगता है। प्रकाश प्रिय होने के कारण इसकी उपरी शाखायें आसमान की तरफ बढ़ती हैं लेकिन नीचे वाली शाखायें ऊपरी शाखाओं की तनिक सी छायां से विचलित हो जाती हैं तथा इधर उधर फैल कर प्रकाश ढूंढने की कोशिश करती हैं जिससे इनमें वह सीधापन नहीं रह जाता जो शीर्ष की शाखाओं में होता है।

जब फूल आते हैं तो ऊपरी अर्द्धांश में अधिक आते हैं जबकि निचले अर्द्धांश में अपेक्षाकृत कम फूल लगते हैं। फूलों का रंग प्राय: गहरा लाल होता है। फूलों भरी कैर की झाडियाँ व वृक्ष दूर से ही दृष्टिगोचर होती हैं। हरी शाखाओं व लाल फूलों का जो अदभुत कन्ट्रास्ट बनता है वह भूले नहीं भूला जा सकता हैं।

हाल ही में एक विचित्र उदाहरण नागौर जिलें में देखने को मिला। नागौर जिले के इनाणा गांव में दो कैर में पीले फूल देखने को मिले। कुछ दूर एक और झाड़ी पर पीले फूल मिले जबकि बाकी सभी झाडियों में लाल फूल थे। लाल फूलों की झाडियों की निरन्तरता में पीला कैर बरबस ही अपनी ओर सबका ध्यान खींचता है।

रंग परिवर्तन के प्रकृति में निम्न चार कारण हो सकते हैं:-

1. प्रजाति, उपजाति या वेरायटी भिन्न हो।
2. किसी सूक्ष्म तत्व की कमी हो।
3. कोई उत्परिवर्तन (Mutation) हुआ हो।
4. प्राकृतिक रंग सान्द्र ढंग से प्रकट न होकर कम बनने के कारण फीके (Lucism) रहे हो।

राजस्थान मे फूलों का रंग विभेद अन्य पौधों में भी देखने को मिलता है। कुछ उदाहरण निम्न हैं:-

क्र.सं.	प्रजाति	फूलों का रंग विभेद
1.	रोहिड़ा	लाल,पीला, लाल व पीले के मध्य की स्थिति
2.	सेमल	लाल,पीला
3.	गुलतुर्री	लाल,पीला
4.	खाखरा (पलाश)	लाल,पीला, दोनों के मध्य की स्थिति
5.	जीनिया	लाल,पीला, दोनों के मध्य की स्थिति
6.	मिराबिलिस जलापा	लाल,पीला

नागौर जिले के इनाणा गांव में लाल फूलों वाला कैर का पौधा और उसके साथ ही पीले फूलों वाले कैर के दो पौधे देखे गये।

छाया : एस. आर. काला

पीले कैर की तरह ही पलाश में पीले फूल की किस्म पृथक वैराइटी है जो वैज्ञानिक भाषा में ब्यूटिया मोनोस्पर्मा ल्यूटिया नाम से जानी जाती हैं। लैटिन भाषा में ल्यूटिया का अर्थ होता है पीला। पीला पलाश राजस्थान में कहीं कहीं उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा एवं भीलवाड़ा में पाया जाता है। इस किस्म का एक वृक्ष सरिस्का बाघ परियोजना में भी मिला है। इस किस्म के कुछ वृक्ष शाहबाद क्षेत्र में भी पाये गये हैं। बोलचाल में लोग इसे ''धोला खाखरा'' कहते है। लेकिन अभी तक वास्तविकता में सफेद (धोला) फूल का खाखरा राजस्थान में नहीं मिला है। ''धोला खाखरा'' के नाम से जितने वृक्ष मिलें हैं वस्तुत: सबके पीले फूल ही है।

फूलों के रंग विभेद के जो प्रकरण सामने आ रहे है उन पर जेनेटिक व वर्गीकरण विज्ञान सम्बंधी अनुसंधान की जरूरत है ताकि पता चल सके की रंग परिवर्तन के लिये जिम्मेदार जो चार कारण बताये है, उनमें कौनसा किस किस्म के लिये उत्तरदायी है।

नर्मदा नहर वृक्षारोपण परियोजना

नर्मदा नामक नदी मध्यप्रदेश के अमरकंटक से निकलकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात में बहते हुए खम्भात की खाड़ी में जाकर गिरती है। इस विशाल नदी में बहकर व्यर्थ जाने वाले पानी के समुचित उपयोग हेतु सरकार द्वारा एक वृहद् सिंचाई परियोजना बनाई गई है। इस परियोजना से मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं राजस्थान राज्य लाभान्वित होंगे।

नर्मदा वाटर डिस्प्यूट ट्रिब्यूनल द्वारा जारी किये गये दिशानिर्देशों के अनुसार राजस्थान को 0.50 एम.ए.एफ. जल प्राप्त होगा। सरदार सरोवर बांध से मुख्य नहर के जरिए यह जल राजस्थान लाया जा रहा है। मुख्य नहर राजस्थान में जालोर जिले के सांचौर तहसील के सिलू गांव में प्रवेश करती है। मुख्य नहर की राजस्थान राज्य में कुल लम्बाई 74 कि.मी. है। 0 कि.मी. से 51.425 कि.मी., 58.845 कि.मी. से 68.375 कि.मी., 70.250 कि.मी. से 74 कि.मी. तक की नहर जालोर जिले में तथा 51.425 कि.मी. से 58.845 कि.मी. व 68.375 कि.मी. से 70.250 कि.मी. तक की नहर बाड़मेर जिले में बनायी गई है। 74 कि.मी. लम्बी मुख्य नहर 1403 कि.मी. लम्बी वितरिकाओं एवं माइनर्स के द्वारा राज्य के जालोर एवं बाड़मेर जिलों में इस जल का उपयोग किया जावेगा। वर्ष 2008 के माह मार्च में मुख्य नहर में जल प्रवाह प्रारम्भ हुआ।

केन्द्रीय जल आयोग द्वारा नर्मदा नहर परियोजना की संशोधित लागत रुपये 1541.36 करोड़ से बढ़ाकर रुपये 2538.37 करोड़ का अनुमोदित किया जा चुका है। संशोधित लागत में वृक्षारोपण कार्य के लिए 74.888 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया है। इस कारण नर्मदा नहर वृक्षारोपण परियोजना वर्ष 2008-09 से वर्ष 2019-20 तक की कुल लागत राशि 74.888 करोड़ रुपये की बनाई गई। जो राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत है। उक्त योजना के अन्तर्गत जालोर एवं बाड़मेर जिले में नर्मदा मुख्य नहर के किनारे कुल 1137 रो कि.मी. में 2.47 लाख पौधों का पौधारोपण किया जा चुका है और नर्मदा मुख्य नहर पर वृक्षारोपण कार्य पूर्ण हो चुका है।

राजस्थान में नर्मदा नहर परियोजना में वितरिकाओं एवं माइनर्स की कुल लम्बाई 1400 किमी है जिसमें 375 कि.मी. वितरिकायें एवं 1025 कि.मी. माइनर्स है। वितरिकाओं के दोनों किनारों पर दो कतार में वृक्षारोपण कार्य हेतु अग्रिम कार्य प्रगति पर है जिसके अन्तर्गत कुल 3.00 लाख पौधों का वृक्षारोपण किया जाएगा। नर्मदा नहर परियोजना के अन्तर्गत माइनर्स का कार्य सिंचाई विभाग द्वारा प्रगति पर है, कार्य पूर्ण होने पर ही माइनर्स पर वृक्षारोपण कार्य प्रारम्भ किया जाएगा। नर्मदा नहर परियोजना अन्तर्गत परियोजना के प्रारम्भ से अब तक विभाग द्वारा कुल 822.00 लाख रुपये व्यय हुआ है।

विभागीय डायनामिक वेबसाइट

❑ विपिन कुमार गुप्ता

विभाग द्वारा इस वर्ष डायनामिक वेबसाइट (rajforest.nic.in) आरम्भ की गयी है। यह वेबसाइट नवीनतम तकनीक से बनायी गयी है। इस वेबसाइट पर विभाग से सम्बन्धित प्राय: सूचनाएं, परिपत्र, आदेश उपलब्ध है। विभागीय वेबसाइट पर विभाग के विभिन्न अनुभागों से सम्बन्धित मैन्यू है जिनमें उन अनुभागों से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध है।

वेबसाइट का मुख्य उद्देश्य विभागीय कार्यों में पारदर्शिता लाना तथा सामान्यजन को विभाग से सम्बन्धित सूचनाएं उपलब्ध कराना है। इसका उपयोग विभागीय कार्यों के लिए भी पर्याप्त रूप से किया जा रहा है तथा सूचनाएं विभागीय कार्यों के लिए भी त्वरित रूप से उपलब्ध हैं।

डायनामिक वेबसाइट की प्रमुख विशेषता है कि इसके पृष्ठों को सम्बन्धित अनुभाग द्वारा अपडेट किया जा सकता है। इसके लिए सम्बन्धित अनुभाग को Username एवं Password दिये गये हैं। परिणामस्वरूप सम्बन्धित अनुभाग की सूचनाएं त्वरित गति से वेबसाइट पर उपलब्ध हो रही हैं।

वेबसाइट पर विभाग से अधिकारियों एवं कर्मचारियों से सम्बन्धित सूचनाएं यथा वरिष्ठता सूची, स्थानान्तरण आदेश एवं अन्य प्रकार के आदेश उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

कार्यकारिणी का गठन

फॉरेस्ट ऑफिसर्स वाइफ वेलफेयर एसोसिएशन की कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें अंजलि सहाय को अध्यक्ष चुना गया।

झांकी को प्रथम स्थान

गणतंत्र दिवस पर बीकानेर वन विभाग की झांकी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। मण्डल वन अधिकारी अरुण सक्सेना, आई.एफ.एस., जिला कलेक्टर डॉ. पृथ्वीराज आई.ए.एस. से शील्ड प्राप्त करते हुए (26 जनवरी, 2012)

वन विभाग द्वारा पृथ्वी दिवस पर अनेक आयोजन

राज्य वन विभाग द्वारा सम्पूर्ण प्रदेश में विभिन्न वन मण्डलों द्वारा पृथ्वी दिवस का समारोहपूर्वक आयोजन किया गया। निम्न स्थानों से पृथ्वी दिवस के आयोजन की सूचनाएं प्राप्त हुई है।

चित्तौड़गढ़ :– पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्य में प्रात: 7.30 ए.एम. ष्पृथ्वी दिवस 2012 के अवसर पर वन मण्डल, चित्तौड़गढ़ द्वारा जारी पोस्टर का विमोचन राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गोल प्याऊ पर श्री महेन्द्र लोढ़ा, अतिरिक्त जिला कलक्टर, चित्तौड़गढ़ एवं श्री बी. एल. स्वर्णकार मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद चित्तौड़गढ़ के मुख्य अतिथ्य में किया गया। इसी अवसर पर पक्षियों हेतु आने वाली गर्मियों में पानी के लिए परिण्डे बांधकर परिण्डा कार्यक्रम का भी शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर पर्यावरण एवं पृथ्वी बचाने के विषय पर चर्चा भी की गई।

इस अवसर पर वन विभाग द्वारा तैयार कराये गये 15 पोस्टरों का प्रदर्शन किया गया तथा पर्यावरण जागरण पैदल रैली का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों/ माध्यमिक विद्यालयों/उच्च प्राथमिक विद्यालयों शिक्षण संस्थाओं एवं भारतीय स्काउट गाईड़ के 500 से अधिक बालक बालिकाओं द्वारा विचारगोष्ठी, प्रश्नोत्तरी एवं रैली में भाग लिया गया।

इस अवसर पर आयोजित पृथ्वी बचाओं विषयक चित्रकला प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग (कक्षा 6 से 8) के 96 छात्र- छात्राओं तथा सीनियर वर्ग (कक्षा 9 से 12) के 61 छात्र - छात्राओं ने भाग लिया।

टोंक :– वन मण्डल टोंक द्वारा जिले के तीन स्थानों यथा टोंक, मालपुरा व देवली रेंज मुख्यालयों पर पृथ्वी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं की रैली शहरों में निकाली गई तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए गए। मण्डल वन अधिकारी टोंक जे.पी. भाटी ने बताया कि टोंक मुख्यालय पर बच्चों की एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

नागौर :– वन मण्डल नागौर द्वारा इस अवसर पर नगर पालिका भवन में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट नागौर ने की। इस अवसर पर उप वन संरक्षक ज्ञानचन्द एवं मानद् वन्य जीव प्रतिपालक व पर्यावरण संरक्षक हिम्मताराम भांभू ने भी विचार प्रकट किए।

उदयपुर :– मण्डल वन अधिकारी ओ. पी. शर्मा ने बताया कि इस अवसर पर जिला पर्यावरण समिति की ओर से एक जागरुकता रैली का आयोजन किया गया, जिसे सांसद रघुवीर मीणा ने झंड़ी दिखाकर रवाना किया।

बांसवाड़ा :– वन मण्डल बांसवाड़ा द्वारा मण्डल वन अधिकारी जिग्नेश शर्मा के नेतृत्व में बांसवाड़ा शहर में एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विद्यालयों के 200 छात्र-छात्राओं व मण्डल स्टाफ ने भाग लिया।

जयपुर :– जन्तुआलय जयपुर, 'रक्षा' एवं 'जरूरत' संस्थाओं के सहयोग से रामनिवास बाग से वर्ल्ड ट्रेड पार्क तक एक रैली का आयोजन किया गया जिसमें विकलांग व्यक्तियों ने भी ट्राई साइकिल से भाग लिया।

नीम वृक्ष (Neem Tree)

एस.आर. काला

वैज्ञानिक नाम : *Azadirachta indica* (अझाडिरेक्टा इण्डिका) (L.) A. Juss, **कुल नाम :** Meliaceae (मिलियेसी), **अंग्रेजी :** Margosa tree (मार्गोसा ट्री), Neem tree (नीम ट्री), Indian lilac (इंडियन लिलेक), **संस्कृत :** निम्ब, अरिष्ट, पिचमर्द, तिभ्तक, हिंगुनिर्यास, पारिमद, **हिन्दी :** नीम, **गुजराती :** लीमड़ों, **मराठी:** कडूनिंब, **पंजाबी :** नीम, **फारसी :** आजाद दरख्ते-हिन्दी, **अरबी :** आजाद-दरख्तुल हिन्दी, **कन्नड़ :** बेवु, **तमिल :** वेम्ब, वेपमा

उत्पत्ति एवं उपलब्धता (Origin & Distribution) : भारत के प्राचीन ग्रंथों एवं शास्त्रों में नीम के बारे में बहुत कुछ लिखा हुआ है। नीम भारतवर्ष में पैदा होने वाला स्थानीय वृक्ष है।

भारत, अफ्रीका, मध्य एवं दक्षिण अमेरिका, अण्डमान, आस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, केरीबियन फिजी, इण्डोनेशिया, हेती, मलेशिया, मॉरिशस, म्यांमार, नाइजीरिया, पाकिस्तान, प्यूटोरिको, श्रीलंका, दी मिडल ईस्ट सूडान, थाइलैण्ड, वर्जिन इजलैण्ड आदि देशों में भी नीम वृक्ष पाया जाता है।

नीम मुख्यतया चार प्रकार के होते हैं। जैसे :

1. नीम - *Azadirachta Indica*, 2. नीम (महा) बकायन- *Melia Azadirechta,* 3. नीम मीठा - *Murraya Koenigii,* 4. अरडू (महानीम) - *Ailanthus excelsa*

नीम की इन सभी प्रजातियों में गुणधर्म के कारण नीम का अपना विशेष स्थान एवं महत्त्व है।

ब्रह्म स्वरूप (Morphology) : निम्बकुल (Meliaceae) का प्रधान वृक्ष गुडूच्यादि वर्ग का है। यह वृक्ष साधारणतया 25 से 60 फुट ऊँचाई के एवं इसका तना 5 फीट से 7 फीट गोलाई (Girth) तक के होते हैं। नीम वृक्ष में, काण्ड सरल, चारों ओर शाखा प्रशाखायुक्त, छाल कुछ मोटी, खुरदरी, स्थूल, बाहर से भूरी धूसर वर्ण की फटी हुई सी होती हैं। अन्दर से पीताभ परतदार तथा मोटे रेशों वाली होती है। छाल के भीतर से चमकीला अम्बर के वर्ण का गोंद निकलता है। नीम की जड़ जकड़ा जड़ प्रकृति की होती है। नीम के पत्र-9 से 16 इंची लम्बी सलाका या सींक पर पत्र-एकान्तर संयुक्त 1 से 3 इंच लम्बे, आधा से डेढ़ इंच चौड़े, दंतुर, तीक्ष्ण नोकदार, दोनों ओर चिकने, सलाका ऊपर से मोटी व नीचे से पतली तथा सलाका के दोनों ओर प्राय: 6-14 जोड़ों के पत्र होते हैं। पत्र ऊपर से मध्य तक बड़े होते हुए पतली सलाका पर कुछ छोटे होते जाते हैं। शिशिर ऋतु में नीम में पतझड़ होकर बसंत में ताम्र लोहित थोड़े मुड़े हुए ऊपर से चमकदार नीचे से खुरदरे कोमल पत्र निकलते हैं। पुष्पागम मार्च से मई तक होता है। पुष्प पत्र कोणों से निकले हुए गुच्छों में छोटे श्वेत वर्ण के सुगंधित होते हैं। पुष्पाभ्यंतर एवं बाह्यकोष के दल के दल 3-6, पुंकेशर 8-10 होते हैं।

ग्रीष्म ऋतु के अन्त एवं वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में गोल-लम्बे, आधा इंच व्यास के फूलों के भीतर से निम्बोली के गुच्छे आते हैं। फल छोटे अण्डकार हरित पीले रंग के बीज केवल एक जो कि बादामी रंग के गूदे में धंसा रहता है। ये कच्ची दशा में हरे पकने पर पीले होकर हवा के झोंके से गिर जाते हैं। पक्की निम्बोली के भीतर से गाढ़ा चेपदार रस व एक मोटा सा बीज होता है। इसके भीतर हरे रंग की दो दालें निकलती हैं। इनसे ही नीम तेल निकाला जाता है। नीम के प्राय: नर वृक्ष से एक प्रकार का स्वादु द्रव कभी-कभार निकलता है। जिसे नीम का मद या नीम की ताड़ी भी कहते हैं।

नीम को मृत्युलोक का कल्प वृक्ष माना जाता है। नीम के बारे में आदि साहित्यों में वर्णन मिलता है कि ये तिक्तक, तिक्त रस वाला, 'अरिष्ट न रिष्टम् शुभमस्यात' - जिससे शरीर को कोई हानि नहीं होती, पारिभद्र-परितोभद्र यस्यात - जिससे सर्व प्रकार का कल्याण होता है। हिंगु निर्यासु-हींग जैसा गोंद जिससे निकले ऐसा।

''सर्व रोग हरो नीम्ब'' यदा नाम निम्ब (निम्ब सिंचति स्वयाथ्यम) अर्थात् जो रोगों को दूर कर स्वास्थ्य को बढ़ाता है। पिचुमर्द (पिचुं कुण्ठं मर्दयति नाशयति) जो कुष्ठादि रक्त विकारों को नष्ट करता है। रात्रि में निम्ब वृक्ष रोग नाशक शुद्ध वायु विशेष छोड़ता है। नीम वृक्ष पर चढ़ी हुई गिलोय (गुर्च) विशेष लाभकारी होती है। क्रमशः

(नीम के रसायनिक संगठन गुणधर्म तथा औषधीय प्रयोग की जानकारी अगले अंक में प्रस्तुत की जाएगी।)

वानिकी प्रशिक्षण संस्थान का कैलेण्डर

जयपुर स्थित वानिकी प्रशिक्षण संस्थान ने चालू वित्तीय वर्ष में आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कैलेण्डर जारी कर दिया है। प्रशिक्षणार्थियों के नामांकन पहले से किए जाने व प्रशिक्षणार्थियों हेतु यह अत्यन्त उपयोगी सूचना है। स.

Training with Human Face

FORESTRY TRAINING INSTITUTE JAIPUR
PROPOSED TRAINING CALENDAR FOR YEAR 2012-13

MONTH / DAY =>	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
APRIL																										TH-001/DA					
MAY							SU-001/MS							SU002/D											SU-003/DA						
JUNE				SU-004/AR							SU-0005/MS			SU-006/D				SU-005/R													
JULY						TH-002/DAR			SU-008/AR				TH-003/HR				SU-009/ST		TH-004/MS						SU-010/ST					TH-005/ST	
AUGUST			TH-006/ST				SU-011/DA						TH-007/ST	TH-008/IFS		TH-009/DAR						SU-012/AR					TH-010/MS			TH-011/ST	
SEPTEMBER			SU-013/AR			TH-012/AR				SU-014/DAR				TH-013/IFS			SU-015/AR							SU-016/P				TH-014/RFS			
OCTOBER				TH-015/DA					TH-016/R	WS-001/VFPMC					TH-017/IFS		SU-017/AR														
NOVEMBER		TH-018/MS			TH-019/RFS							SU-019/R				TH-020/IFS					TH-021/DAR						TH-022/DAR				
DECEMBER						TH-023/DAR				RS-001/IFS							WS-002/HRM		SU-019/AR					TH-024/R							
JANUARY							PR-002/IFS								SU-020/AR						TH-025/RFS										
FEBRUARY						WS-003/VFPMC					WS-004/DAR			SU-021/AR				SU-022/C		WS-005/VFPMC											
MARCH					WS-006/VFPMC																										

S.N.	Course Title	Code	S.N.	Course Title	Code	S.N.	Course Title	Code
1	EXPOSURE TO RTI	TH-001/DA	20	PREPARATION OF WORKING PLAN	TH-009/DAR	39	STRESS MANAGEMENT	TH-020/IFS
2	COMPUTER TRAINING-I	SU-001/MS	21	WATER CONS. & RAIN WATER HARVESTING	SU-012/AR	40	CLIMATE CHANGE & REDD GOVERNANCE	TH-021/DAR
3	COMPUTER TRAINING-I	SU-002/D	22	STORE PURCHASE RULES & INVENT. CONT.	TH-10/MS	41	EFFECTIVE LEADERSHIP AND TEAM BUILDING	TH-022/DAR
4	E-PROCUREMENT	SU-003/DA	23	ENVIRONMENTAL AWARENESS	TH-011/ST	42	ECO-TOURISIM DEVELOEMENT PROG.	TH-023/DAR
5	COMPUTER TRAINING-I	SU-004/AR	24	APPLIED RES. IN VEGET. PROP. & NURSERY TECH.	SU-013/AR	43	PROPOSED IFS COMP. TRG./W-S	PR-001/IFS
6	OFFICE PROCEDURE	SU-005/MS	25	LAW ENFORCEMENT TRAINING	TH-12/AR	44	MEDIA EXPOS.TO ENVT, FOREST & W.L. ISSUES	WS-002/HRM
7	COMPUTER TRAINING-II	SU-006/D	26	EXECUTIVE DEVELOPMENT PROG.-I	SU-014/DAR	45	W. L. MANAGEMENT & INTELLIGENE GATHERING	SU-019/AR
8	EXECUTIVE DEV. PROGRAMME-II	SU-007/R	27	HAPPINESS IN LIFE & WORK	TH-13/IFS	46	JFM & CONFLICT RESOLUTION	TH-024/R
9	EFFECTIVE COMMUNICATION & PRESENTATION SKILL	TH-02/DAR	28	COMPUTER TRAINING-I	SU-015/AR	47	PROPOSED IFS COMP. TRG./W-S	PR-002/IFS
10	COMPUTER TRAINING-II	SU-008/AR	29	PEONS-SKILL UPGRADATION TRG.	SU-016/P	48	W. L. MANAGEMENT & INTELLIGENE GATHERING	SU-20/AR
11	GREEN INDIA MISSION	TH-003/HR	30	HAPPINESS IN LIFE & WORK	TH-14/RFS	49	COMPULSORY TRAINING PROGRAMME FOR RFS	TH-25/RFS
12	PLANT RAISING & NURSERY TECH.	SU-009/ST	31	EXPOSURE TO RTI	TH-15/DA	50	VFPMC EXCHANGE VISIT	WS-3/VFPMC
13	SERVICE RULES AND DISCIP.MATTERS	TH-04/MS	32	EFFECTIVE IMPLEMENT. OF MG-NREGS	TH-016/R	51	VALUE ADDITION TECHNIQUES TO MFP'S	WS-004/DAR
14	PLANT RAISING & NURSERY TECH.	SU-010/ST	33	VFPMC EXCHANGE VISIT	WS-1/VFPMC	52	TRANQULIZATION OF WILD ANIMALS	SU-021/AR
15	WATER CONS. & RAIN WATER HARVESTING	TH-005/ST	34	ADMINISTRATIVE LEADERSHIP	TH-017/IFS	53	CHAUFFERS SKILL UPGRADATION TRG.	SU-022/C
16	WATER CONS. & RAIN WATER HARVESTING	TH-006/ST	35	COMPUTER TRAINING-II	SU-017/AR	54	VFPMC EXCHANGE VISIT	WS-5/VFPMC
17	EXECUTIVE DEV. PROGRAMME-II	SU-011/DA	36	NOTING & DRAFTING	TH-018/MS	55	VFPMC EXCHANGE VISIT	WS-6/VFPMC
18	ENVIRONMENTAL AWARENESS	TH-007/ST	37	COMPULSORY TRAINING PROGRAMME FOR RFS	TH-019/RFS	TH-THEMATIC, SU-SKILL UPGRADATION, WS-WORKSHOP, PR-PROPOSED, I-IFS,R-RFS,D-DCF,A-ACF,R-RFO,M-Media Person,ST-Student & Teachers,P-Peons,C-Chauffers, MS-Min.Staff(OS/OA/PA/ STENO/UDC/LDC), O-Others		
19	EFFECTIVE LEADERSHIP AND TEAM BUILDING	TH-008/IFS	38	BOOK KEEPING & A/C MAINTENANCE OF VFPMC	SU-018/R			

Email : ftijaipur@rediffmail.com   Telefax : 0141-2710034

शेष पृष्ठ 1 का... पृथ्वी दिवस ...

उन्होंने एक स्वस्थ व सतत पर्यावरण की मांग की। हजारों विश्वविद्यालयों ने पर्यावरण अवक्रमण के विरुद्ध प्रदर्शन किए। ऐसे समूह जो तेल रिसाव, प्रदूषणकारी उद्योगों, कच्चे मल, विषैले अपशिष्ट भण्डारण, कीटनाशकों के उपयोग, प्रकृति को क्षति तथा वन्य प्राणियों की विलुप्ति से जुड़े थे स्वत: ही इस संघर्ष में जुड़ गए। इस प्रकार 1970 के प्रथम पृथ्वी दिवस को सभी क्षेत्रों का सहयोग मिला। इस आयोजन ने संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा अभिकरण के गठन तथा स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल तथा विलुप्त प्रजातियों के संरक्षण के सम्बन्ध में कार्यवाही किए जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ। 20 वर्षों में पृथ्वी दिवस का आयोजन विश्व व्यापी हो चुका था तथा इसका प्रभाव विश्व के 141 देशों तक फैल गया था। 1990 में इस आन्दोलन ने 1992 में आयोजित विश्व पृथ्वी दिवस का मार्ग प्रशस्त किया। पृथ्वी दिवस के सफल आयोजन के कारण सीनेटर नेल्सन को अमेरिका का सर्वोच्च असैनिक सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2010 तक आते-आते पर्यावरणीय संकटों में ग्लोबल वार्मिंग और जुड़ गया और इस वर्ष का पृथ्वी दिवस इसी विषय पर केन्द्रित रहा।

पृथ्वी दिवस के आयोजनकर्ताओं ने वर्ष 2012 तक दस लाख पौधे लगाने का लक्ष्य भी रखा है।

वर्ष 2012 के पृथ्वी दिवस की थीम ''मोबिलाइज द अर्थ'' रखी गई है। इस वर्ष नवीनीकृत ऊर्जा को अधिक उपयोग में लेने की मांग विश्व स्तर पर की जा रही है। जैविक ईंधन के उपयोग को समाप्त करने, नवीनीकृत ऊर्जा तकनीक पर बल देने, ऊर्जा दक्षता को सुधारने व प्रत्येक व्यक्ति को ऊर्जा उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया जाएगा।

ये समय की मांग है कि हम सभी नागरिक अपनी पृथ्वी को बचाए रखने के लिए जो भी संभव है, हर स्तर पर प्रयास करे ताकि पृथ्वी मानव व अन्य जीवित प्राणियों के निवास के योग्य बनी रहे।

स्थानान्तरण/पद स्थापन

राज्य सरकार ने 11 अप्रैल, 2012 को एक आदेश जारी कर राजस्थान वन सेवा के 6 अधिकारियों के स्थानान्तरण व एक अधिकारी का पूर्व में किया गया स्थानान्तरण निरस्त किया है। आदेशानुसार श्री जोधराज सिंह, सहायक वन संरक्षक, सरिस्का, श्री मानसिंह मीणा, सहायक वन संरक्षक, टहला, सरिस्का बाघ परियोजना सरिस्का, श्री विपिन गुप्ता, सहायक वन संरक्षक, रिसर्च ऑफिसर, सरिस्का बाघ परियोजना सरिस्का, श्री घनश्याम शर्मा, सहायक वन संरक्षक, सवाईमाधोपुर, श्री धर्मपाल यादव, सहायक वन संरक्षक, सपोटरा, करौली, श्री सुदर्शन शर्मा, सहायक वन संरक्षक, (RTR) सवाईमाधोपुर पदस्थापित किया गया है।

इस विभाग के स्थानान्तरण समसंख्यक आदेश दिनांक 29.9.11 द्वारा श्री रंगलाल जाट, सहायक वन संरक्षक का सहायक वन संरक्षक नागौर के पद पर किया गया स्थानान्तरण एतद् द्वारा निरस्त किया जाता है।

इसी प्रकार प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान जयपुर ने 12 अप्रैल, 2012 को एक आदेश प्रसारित कर निम्नानुसार स्थानान्तरण किए हैं। आदेशानुसार श्री भवानी सिंह, सहायक वन संरक्षक, अकबरपुर बाघ परियोजना सरिस्का एवं श्री उदयराम, सहायक वन संरक्षक, नागौर पदस्थापित किया गया है।

इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 10.1.12 द्वारा श्री नवल किशोर गुप्ता, क्षेत्रीय वन अधिकारी, जयपुर पूर्व का सहायक वन संरक्षक सरिस्का के पद पर किया गया स्थानान्तरण एतद्द्वारा तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाता है।

सेवानिवृत्त

मार्च, 2012 में राज्य वन सेवा के निम्न अधिकारी सेवानिवृत्त हो गए हैं :

1. श्री औंकार लाल मेनारिया, उप वन संरक्षक कार्य आयोजना अधिकारी, उदयपुर; तथा
2. श्री के.डी. देवल, उप वन संरक्षक, पी.एण्ड एम. भरतपुर।

अनुरोध

वानिकी समाचार में प्रकाशनार्थ आलेख, छायाचित्र, विभागीय गतिविधियों की जानकारी, साझा वन प्रबन्ध की सफल कहानियां, कविताएं तथा अन्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। यह सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है।

इस पत्रिका के अंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

– सम्पादक

श्रद्धांजलि

भारतीय वन सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी श्री डी.पी. गोविल का आकस्मिक निधन 10 अप्रैल, 2012 को हो गया है। वन विभाग के सभी कार्यालयों द्वारा शोक सभा आयोजित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

Book-Post

वन विभाग, राजस्थान के लिए उप वन संरक्षक (संचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण) कार्यालय मुख्य वन संरक्षक (सूचना प्रौद्योगिकी) अरावली भवन, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर-05 से प्रकाशित। मुद्रण : पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर। अप्रैल, 2012/2000 Website : www.rajforest.nic.in • E-mail : vanikisamachar@yahoo.com